Gyanvividha, Vol.-2; Issue-3 (July-Sept.) 2025 : PP-67-72

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-3 (July-Sept.) 2025
Page No.- 67-72
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

1. श्रीमती सुधा गोयल
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, डॉ. सी.वी. रमन यूनिवर्सिटी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़.

2. डॉ. सुषमा वानखेड़े
सहायक प्राध्यापक, हसदेव शिक्षा महाविद्यालय ,कोरबा, छत्तीसगढ़.

3. श्रीमती रसिका लोनकर
शोधार्थी, अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़.

4. डॉ. कपिल कुमार काटले
सहायक प्राध्यापक, डी. पी. विप्र. शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़.

5. रामानुज निषाद
लाइब्रेरियन (अतिथि), इंद्रावती महाविद्यालय, भोपालपटनम, बीजापुर, छत्तीसगढ़.

Corresponding Author :

श्रीमती सुधा गोयल
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, डॉ. सी.वी. रमन यूनिवर्सिटी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़.

आज के परिदृश्य में सोशल नेटवर्क का प्रभाव : एक चर्चा

सार : नए अध्ययनों से पता चलता है कि युवा अपने दैनिक जीवन का एक बड़ा हिस्सा सोशल मीडिया के माध्यम से बातचीत करते हुए बिताते हैं। जैसे-जैसे तकनीक में सुधार और प्रगति हो रही है, सोशल नेटवर्किंग साइट्स का समाज और मानवीय रिश्तों पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से प्रभाव बढ़ रहा है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स किशोरों के सामाजिक विकास को प्रभावित करती हैं। इसके अलावा, किशोरों द्वारा इन साइट्स पर की जाने वाली गतिविधियों और उनके सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में कोई व्यापक जानकारी उपलब्ध नहीं है। स्मार्टफोन ने सोशल नेटवर्किंग के उपयोग और ऐसी साइट्स पर बिताए जाने वाले घंटों की संख्या को बढ़ाकर अपार संभावनाएं पैदा की हैं। लंबे समय तक ऑनलाइन रहने और एक ही समय में विभिन्न स्रोतों से अलग-अलग जानकारी प्राप्त करने में सक्षम होने से सूचना का अतिभार हो सकता है। छात्रों को प्राप्त जानकारी को छांटने में समस्या हो सकती है और उन्हें यह तय करने में कठिनाई हो सकती है कि वे किस स्रोत पर भरोसा कर सकते हैं और इसलिए किसे चुनें। वर्तमान समय में सोशल मीडिया का उपयोग तेज़ी से बढ़ रहा है और इसके साथ ही इसका प्रभाव भी बढ़ रहा है। युवाओं के बीच सोशल मीडिया का उपयोग तेज़ी से बढ़ रहा है। संचार का एक माध्यम होने के साथ-साथ, राजनीति, अर्थव्यवस्था और अन्य क्षेत्रों में इसका उपयोग बढ़ रहा है। इसके कारण, यह समाज के हर पहलू को प्रभावित कर रहा है, खासकर युवाओं के नैतिक और सामाजिक मूल्यों को, इसके साथ ही यह युवाओं की जीवनशैली और विचारों को भी प्रभावित कर रहा है। युवा अपनी निजी ज़िंदगी सोशल मीडिया पर साझा करने लगे हैं और साथ ही, वे अन्य अपुष्ट ख़बरों को भी सच मानने लगे हैं। जिसके कारण सोशल मीडिया का नकारात्मक पहलू भी सामने आ रहा है।

कीवर्ड: सोशल मीडिया, ऑनलाइन, इंटरनेट, शिक्षा, समाज, नेटवर्किंग।

परिचय : सोशल मीडिया संचार की विशेषता कम गुमनामी और ऑफ़लाइन तथा ऑनलाइन सामाजिक संपर्क है। किशोरों और किशोरियों पर सोशल मीडिया का प्रभाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, न केवल इसलिए कि बच्चों का यह विशेष समूह विकासात्मक रूप से कमज़ोर है, बल्कि इसलिए भी कि वे सोशल नेटवर्किंग के सबसे ज़्यादा उपयोगकर्ताओं में से हैं। कॉमन सेंस मीडिया की एक रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका में 75 प्रतिशत किशोरों के वर्तमान में सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर प्रोफाइल हैं, जिनमें से 68 प्रतिशत फेसबुक को अपने मुख्य सोशल नेटवर्किंग टूल के रूप में इस्तेमाल करते हैं। हालाँकि सोशल नेटवर्किंग निस्संदेह सामाजिक संबंधों को व्यापक बनाने और तकनीकी कौशल सीखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, लेकिन इसके जोखिमों को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। आत्म-नियमन में कमी या कठिनाई और साथियों के दबाव के प्रति संवेदनशीलता किशोरों को फेसबुक अवसाद, सेक्सटिंग और साइबरबुलिंग जैसी बुराइयों के प्रति संवेदनशील बनाती है, जो वास्तविक खतरे हैं। सोशल नेटवर्क से प्रेरित मोटापा, इंटरनेट की लत और नींद की कमी जैसी अन्य समस्याएँ विभिन्न अध्ययनों में प्राप्त विरोधाभासी परिणामों के कारण गहन जाँच के दायरे में हैं। सोशल मीडिया प्रभावशाली है और आभासी और वास्तविक, दोनों दुनिया में एक शक्तिशाली भूमिका निभाता है। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म दिन-ब-दिन बढ़ रहे हैं और लाखों उपयोगकर्ता हर दिन अपने सोशल मीडिया फ़ीड्स को स्क्रॉल करते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म सिर्फ़ किशोरों का खेल का मैदान नहीं है, बल्कि हर उम्र के लोगों की सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म में गहरी रुचि है। इसके अलावा, यह व्यवसाय के प्रबंधन और संचालन के लिए एक महत्वपूर्ण ऑनलाइन स्रोत बन गया है। स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यवसाय, विनिर्माण, विपणन आदि जैसे प्रमुख प्राथमिक क्षेत्र सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर हैं और लगातार विस्तार कर रहे हैं। हालाँकि, कुछ अन्य चीज़ें भी हैं जो सोशल मीडिया से प्रभावित होती हैं। आइए उन चीज़ों के बारे में बात करते हैं।

सीखने की रणनीतियाँ : किशोरों के लिए सोशल मीडिया का एक और लाभ यह है कि यह उपयोगकर्ताओं के सीखने के अवसरों को बढ़ा सकता है, चाहे वह पारंपरिक हो या ऑनलाइन शिक्षा। सोशल नेटवर्क स्कूल के बाहर विचारों और सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए एक मंच प्रदान करते हैं। इसके अलावा, कुछ स्कूल ब्लॉग को एक शिक्षण उपकरण के रूप में उपयोग करते हैं, जो रचनात्मकता, लिखित अभिव्यक्ति और अंग्रेजी कौशल को मजबूत करने का लाभ प्रदान करता है। सोशल नेटवर्क व्यवसायों को कई तरह से मदद करते हैं। रेडियो, टीवी विज्ञापन और प्रिंट विज्ञापन जैसे पारंपरिक मार्केटिंग माध्यम अब पूरी तरह से अप्रचलित हो चुके हैं और हज़ारों डॉलर की माँग करते हैं। हालाँकि, सोशल मीडिया के ज़रिए व्यवसाय अपने लक्षित ग्राहकों से मुफ़्त में जुड़ सकते हैं, केवल ऊर्जा और समय की लागत आती है। फेसबुक, ट्विटर, लिंक्डइन या किसी अन्य सोशल साइट के माध्यम से आप अपनी मार्केटिंग लागत को काफी हद तक कम कर सकते हैं। ट्विटर, फेसबुक और लिंक्डइन जैसी सोशल साइट्स की बढ़ती लोकप्रियता के कारण, सोशल नेटवर्क ब्लॉगर्स, लेख लेखकों और सामग्री निर्माताओं के लिए सबसे व्यवहार्य संचार विकल्प के रूप में लोकप्रिय हो रहे हैं। सोशल नेटवर्क ने संचार और बातचीत की सभी बाधाओं को दूर कर दिया है, और अब कोई भी विभिन्न विषयों पर अपनी धारणा और विचार व्यक्त कर सकता है। छात्र और विशेषज्ञ समान विचारधारा वाले लोगों के साथ बातचीत और विचार साझा करने में सक्षम होते हैं तथा किसी विशेष विषय पर इनपुट और राय प्राप्त कर सकते हैं।

प्रभाव : साइबरबुलिंग धमकाने वालों को आसान लगती है क्योंकि वे अपने पीड़ितों की प्रतिक्रियाओं

को व्यक्तिगत रूप से नहीं देखते हैं, और इसलिए इसके परिणामों का प्रभाव कम होता है। हालाँकि, वास्तव में, इसके परिणाम जीवन बदल देने वाले हो सकते हैं, यहाँ तक कि पीड़ित अपनी जान भी ले सकते हैं या मानसिक रूप से इतने व्यथित हो सकते हैं कि उन्हें चिकित्सा हस्तक्षेप की आवश्यकता पड़ सकती है। विडंबना यह है कि सोशल नेटवर्किंग गतिविधियों की व्यक्तिपरक प्रकृति साइबरबुलिंग के शिकार की पहचान करना मुश्किल बना देती है, लेकिन इसके स्पष्ट संकेतों में कंप्यूटर या मोबाइल फोन के आसपास बचना या चिंतित होना और व्यवहार में अचानक बदलाव शामिल हैं। स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के बारे में गुमनाम रूप से जानकारी प्राप्त करने में सक्षम होना सोशल मीडिया का उपयोग करने वाले किशोरों और किशोरियों के लिए एक और लाभ है। सुरक्षित यौन संबंध, तनाव में कमी और अवसाद के लक्षण जैसे विषय किशोरों के लिए विशेष रूप से रुचिकर हैं और इन विषयों पर जानकारी अब इन नेटवर्क तक पहुँच रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए आसानी से उपलब्ध है। पुरानी बीमारियों से पीड़ित बच्चे और किशोर विभिन्न साइटों और नेटवर्क के माध्यम से सहायता प्राप्त कर सकते हैं और समान स्थितियों और लक्षणों का अनुभव करने वाले अन्य लोगों के साथ संवाद कर सकते हैं। फेसबुक डिप्रेशन, जिसे एक भावनात्मक अशांति के रूप में परिभाषित किया जाता है जो किशोरों और किशोरियों द्वारा सोशल मीडिया साइटों पर बहुत समय बिताने से विकसित होती है, अब एक बहुत ही वास्तविक बीमारी बन गई है। हाल के अध्ययनों से पता चला है कि तुलना फेसबुक डिप्रेशन का मुख्य कारण है; अध्ययनों से पता चला है कि कमतर तुलना (कमतर लोगों से तुलना) भी उतनी ही अवसाद का कारण बन सकती है जितनी कि उच्चतर तुलना (खुद से बेहतर लोगों से तुलना)। हालाँकि, कुछ विरोधाभासी रिपोर्टें भी हैं। एक अन्य अध्ययन से पता चला है कि फेसबुक हमें खुश करता है और उपयोगकर्ताओं के बीच सामाजिक विश्वास और जुड़ाव बढ़ाता है। चूँकि हमारा मस्तिष्क जुड़ने के लिए बना है, इसलिए यह उम्मीद करना तर्कसंगत लगता है कि सोशल नेटवर्क, साझा करने की सुविधा देकर, मनोवैज्ञानिक संतुष्टि की एक आत्म-सुदृढ़ भावना पैदा कर सकते हैं। ये अध्ययन दर्शाते हैं कि भलाई पर सोशल नेटवर्क का प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि सोशल नेटवर्क का उपयोग कैसे किया जाता है - चाहे जुड़ने के लिए हो या तुलना करने के लिए।

एक युवा व्यक्ति का डिजिटल पदचिह्न उसकी भविष्य की प्रतिष्ठा के लिए एक बड़ा जोखिम है। जो नाबालिग इन गोपनीयता संबंधी मुद्दों के बारे में जाने बिना इंटरनेट का उपयोग करते हैं, वे अनुचित फ़ोटो, वीडियो और संदेश पोस्ट कर सकते हैं, यह जाने बिना कि वे जो कुछ भी ऑनलाइन डालते हैं वह वहीं रहेगा। नियोक्ता और कॉलेज प्रवेश बोर्ड यह देख सकते हैं कि उपयोगकर्ता क्या पोस्ट कर रहे हैं और माउस का एक सेकंड का क्लिक किसी की भावी नौकरी या कॉलेज में प्रवेश को खतरे में डाल सकता है। 6% छात्रों ने बताया कि सोशल नेटवर्किंग साइट पर अनुभव के परिणामस्वरूप उन्हें स्कूल में परेशानी का सामना करना पड़ा।

किशोरों और किशोरों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग से जुड़ा एक और जोखिम विज्ञापन है। सोशल मीडिया साइटें अक्सर कई विज्ञापन तकनीकों का उपयोग करती हैं, जैसे जनसांख्यिकी-आधारित विज्ञापन, जो विशिष्ट कारकों (इस मामले में: आयु) के आधार पर लोगों को लक्षित करते हैं और व्यवहार संबंधी विज्ञापन, जो लोगों को उनके ब्राउज़िंग इतिहास और व्यवहार के आधार पर लक्षित करते हैं। ये विज्ञापन न केवल खरीदारी के पैटर्न को प्रभावित करते हैं, बल्कि किशोरों के दृष्टिकोण को भी बदल सकते हैं कि क्या सामान्य माना जाता है। किशोर और किशोर विशेष रूप से सुझावों के प्रति संवेदनशील होते हैं, और विज्ञापनों के संपर्क में आने से इन बच्चों के स्वयं, दूसरों और अपने आसपास की दुनिया के

प्रति दृष्टिकोण में हेरफेर और विकृति उत्पन्न हो सकती है।

सोशल मीडिया का एक प्रभाव यह है कि यह लोगों को सच्ची दोस्ती के बजाय बनावटी रिश्ते बनाने और उन्हें संजोने के लिए प्रोत्साहित करता है। सोशल मीडिया पर प्रयुक्त "दोस्त" शब्द में पारंपरिक दोस्ती जैसी आत्मीयता का अभाव है, जहाँ लोग वास्तव में एक-दूसरे को जानते हैं, एक-दूसरे से बात करना चाहते हैं, एक घनिष्ठ संबंध रखते हैं और अक्सर आमने-सामने बातचीत करते हैं।

प्रत्येक योग्य राजनेता को सोशल मीडिया के क्षेत्र में गहराई से जाना चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने अमेरिका, ईरान और भारत सहित दुनिया भर के कई चुनावों में अहम भूमिका निभाई है। इन्होंने लोगों को एक मुद्दे पर एकजुट करने और कई देशों में जन आंदोलनों और राजनीतिक अशांति को प्रेरित करने का भी काम किया है। जीवन की अधिकांश चीज़ों की तरह, सोशल नेटवर्किंग के भी सकारात्मक और नकारात्मक पहलू हैं, जिन दोनों पर हमने अब चर्चा की है। मेरा अंतिम विचार यह है कि जब संयम से इस्तेमाल किया जाए, और खासकर युवा लोग इनका इस्तेमाल कैसे कर रहे हैं, इस पर नियंत्रण रखा जाए, तो सोशल नेटवर्किंग साइट्स या तो अच्छी होती हैं या बुरी।

नियमित सोशल नेटवर्किंग साइट्स के अलावा, लिंक्डइन जैसे पेशेवर नेटवर्क नियुक्ति प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह प्लेटफ़ॉर्म न केवल लोगों को अपने पेशे, कार्य संस्कृति और कॉर्पोरेट उद्योगों के बारे में अपनी राय साझा करने में मदद करता है, बल्कि उन्हें एक ब्रांड के रूप में खुद को विकसित और विपणन करने का भी अवसर देता है। ऐसे सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म उन्हें प्रभावित और प्रोत्साहित करते हैं, क्योंकि यह उनकी उपलब्धियों को दुनिया के सामने लाता है। अगर हम प्रशिक्षण और विकास की बात करें, तो सोशल मीडिया इस पर भी काफी हद तक प्रभाव डालता है। कई विशेषज्ञ पढ़ाने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म का इस्तेमाल करते हैं। शिक्षक सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म के ज़रिए पढ़ाते हैं। वे लाइव कक्षाएं लेते हैं और पढ़ाने के लिए लंबे और छोटे वीडियो विकल्पों का उपयोग करते हैं। दूसरी ओर, सोशल मीडिया शिक्षार्थियों को और अधिक सीखने के लिए प्रभावित करता है। सीखने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग करना बहुत आसान है! बस एक स्थिर इंटरनेट कनेक्शन और एक मोबाइल फोन की आवश्यकता है। दूसरी ओर, सोशल मीडिया पर ऐसे विकल्प शिक्षार्थियों को स्वयं को शिक्षित करने के लिए प्रभावित करते हैं। लिंक्डइन, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि जैसे प्लेटफॉर्म आम शिक्षण उपकरण बन गए हैं।

सोशल मीडिया अपने उपयोगकर्ताओं को किसी उद्देश्य का समर्थन करने और दान करने के लिए प्रभावित करता है। इसके माध्यम से, लोग न केवल किसी अच्छे उद्देश्य के लिए दान करने में अच्छा महसूस करते हैं, बल्कि इससे दूसरे पक्ष के लोगों की भी मदद होती है। सोशल मीडिया का हमारे समाज पर बहुत बड़ा प्रभाव है। यह लोगों के हितों को जोड़ता है और उन्हें अपना एक सामाजिक दायरा बनाने में मदद करता है जहाँ वे एक-दूसरे के साथ विचार साझा कर सकते हैं। चाहे वह किसी ऐसे खेल के बारे में हो जिसके लोग दीवाने हैं या ऐसे मीम्स जो उन्हें हँसाते हैं और उससे जुड़ते हैं। सोशल मीडिया हमारे समाज को कई तरह से प्रभावित करता है।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर साइबरबुलिंग आम हो गई है। इतना ही नहीं, कई किशोर इन प्लेटफॉर्म्स का इस्तेमाल अफ़वाहें फैलाने, निजी वीडियो और तस्वीरें शेयर करने के लिए करते हैं, ताकि दूसरों की प्रतिष्ठा धूमिल की जा सके और उन्हें ब्लैकमेल किया जा सके। हालाँकि, यह सिर्फ़ किशोरों तक ही सीमित नहीं है। कई वयस्क भी दूसरों को ब्लैकमेल करने के इरादे से ऐसा करते हैं। अप्रत्यक्ष रूप से, सोशल मीडिया लोगों को साइबरबुलिंग की ओर भी प्रभावित करता है। ज़ाहिर

है, सोशल मीडिया की सबसे बड़ी कमियों और चुनौतियों में से एक साइबरबुलिंग से लड़ना है।

निष्कर्ष : सोशल मीडिया छात्रों के जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है, जो उनके संचार, सीखने और सामाजिक अंतःक्रियाओं को प्रभावित कर रहा है। यह शोधपत्र छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सोशल मीडिया के बहुआयामी प्रभाव की जाँच करता है, और इसके सकारात्मक योगदानों और संभावित कमियों, दोनों का अन्वेषण करता है। हाल के अनुभवजन्य अध्ययनों के आधार पर, यह शोध इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे सोशल मीडिया का संयमित उपयोग सहयोगात्मक शिक्षण और संसाधन साझाकरण को बढ़ावा दे सकता है, जबकि अत्यधिक उपयोग से ध्यान भटक सकता है, अध्ययन का समय कम हो सकता है और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। किशोरावस्था पंख फैलाने और दुनिया में पहली उड़ान भरने का समय है, और माता-पिता और देखभाल करने वालों को इस प्रक्रिया का हिस्सा बनने की आवश्यकता है। सोशल नेटवर्किंग के क्षेत्र में, इसके लिए आवश्यक है कि माता-पिता सोशल नेटवर्किंग के फायदे और नुकसान के बारे में शिक्षित हों और स्वयं सोशल नेटवर्किंग साइट्स से जुड़ें, न कि इधर-उधर घूमने के लिए, बल्कि अपने किशोर बच्चे की गतिविधियों के बारे में जागरूक रहने के लिए। यह आवश्यक है कि माता-पिता अपने बच्चे की गोपनीयता सेटिंग्स और ऑनलाइन प्रोफ़ाइल के बारे में जागरूक हों और उसकी निगरानी करें। सोशल नेटवर्क प्रोटोकॉल और शिष्टाचार के बारे में खुली चर्चा वैश्विक डिजिटल नागरिकता और स्वस्थ व्यवहार स्थापित करने में बहुत मददगार साबित होगी। सोशल मीडिया छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत करता है। हालाँकि यह सहयोग और संसाधनों तक पहुँच के माध्यम से सीखने को बेहतर बना सकता है, लेकिन इसके अत्यधिक उपयोग से ध्यान भटकने, नींद न आने और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है। सोशल मीडिया की शैक्षिक क्षमता का लाभ उठाकर और इसकी कमियों को कम करने के लिए रणनीतियाँ लागू करके, शिक्षक, अभिभावक और नीति-निर्माता छात्रों को शैक्षणिक सफलता प्राप्त करने में सहायता कर सकते हैं। भविष्य के शोध में दीर्घकालिक प्रभावों और शैक्षिक परिणामों को आकार देने में उभरते प्लेटफार्मों की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।

संदर्भ :

1. A. Anagnostopoulos, R. Kumar, and M. Mahdian. Influence and correlation in social networks. In KDD, 2008.
2. Abhimanyu Shankhdhar, JIMS / Social media and businss / [9] http://www.pewinternet.org/2015/01/09/socialmedia-update2014/pi_2015-01-09_social-media_01/
3. Aveseh Asough, SOCIAL MEDIA AND ETHICS - The Impact of Social Media on Journalism Ethics, Center for International Media Ethics (CIME), December 2012.
4. Dr. M. Neelamalar & Ms. P. Chitra,Dept. of Media Sciences, Anna University Chennai, India, New media and society: A Study on the impact of socialnetworking sites on indian youth, Estudos em Comunicac¸ ˜ao no6, 125-145 Dezembro de 2009.
5. Ghulam Shabir,Yousef Mohammed Yousef Hameed,Ghulam Safdar, Syed Mohammed Farooq Shah Gilani,"the impact of social media on Youth: A case study of Bahawalpur City, Asian

Journal of Social Sciences & Humanities Vol. 3(4) November 2014.
6. Gitanjali Kalia Chitkara University, Punjab, A Research Paper on Social media:An Innovative Educational Tool, Issues and Ideas in Education Vol. 1 March 2013 pp. 43–50.
7. Impact of Social Media on Adolescent Behavioral Health in California, Source: (Lenhart, 2010) except for Online video sites (Nielsen, 2009) & Online gaming (McAfee, 2010.
8. S. Aral and D. Walker. Identifying influential and susceptible members of social networks. Science, 2012. [10] S. Aral and D. Walker. Tie strength, embeddedness, and social influence: A large-scale networked experiment. Management Science, 2014.
9. S. Aral, L. Muchnik, and A. Sundararajan. Distinguishing influence -based contagion from homophily-driven diffusion in dynamic networks. PNAS, 2009.
10. T. Althoff and J. Leskovec. Donor retention in online crowdfunding commun- ities: A case study of donorschoose.org. In WWW, 2015.
11. T. Althoff, C. Danescu-Niculescu-Mizil, and D. Jurafsky. How to ask for a favor: A case study on the success of altruistic requests. In ICWSM, 2014.
12. T. Althoff, K. Clark, and J. Leskovec. Large-scale analysis of counseling conversations: An application of natural language processing to mental health. TACL, 2016.
13. T. Althoff, P. Jindal, and J. Leskovec. Online actions with offline impact: How online social networks influence online and offline user behavior. In WSDM, 2017. Online Appendix. http://stanford.io/2fcTB3p.
14. T. Althoff, R. Sosic, J. L. Hicks, A. C. King, S. L. Delp, and J. Leskovec. Quantifying dose response relation-ships between physical activity and health using propensity scores. In NIPS ML4H, 2016.
15. T. Althoff, R. W. White, and E. Horvitz. Influence of Poké- Mon Go on physical activity: Study and implications. J Med Internet Res, 18(12):e315, Dec 2016.
16. Waqas Tariq, Madiha Mehboob, M. Asfandyar Khan , FaseeUllah, The Impact of Social Media and Social Networks on Education and Students of Pakistan, IJCSI International Journal of Computer Science Issues, Vol. 9, Issue 4, No 3, July 2012.
17. https://softspacesolutions.com/blog/social-media-influence/
18. https://www.schooliseasy.com/2014/02/social-media-in-theclassroom/
19. http://blog.hootsuite.com/social-media-for-business/
20. http://www.automatedbuildings.com/news/sep11/columns/1108
21. http://www.practicalparticipation.co.uk/yes/what/what_does_it_ change